जग के मोहसिन

लेखक
मौलाना अबुल हसन अली नदवी

अकादमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन
नदवा ११९ लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक :
एकाडमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन
पोस्ट बाक्स नं० ११९
नदवतुल उलमा, लखनऊ-२२६००७
(भारत)

क्रम संख्या १५९

हिन्दी प्रथम संस्करण	१९८२
हिन्दी द्वितीय संस्करण	१९९६
उर्दू द्वितीय संस्करण	१९७८
अरबी प्रथम संस्करण	१९८०
अंग्रेजी प्रथम संस्करण	१९७७

Composed By :
NASHIR COMPUTERS & PRINTERS
35, Kallan ki Lat, Gwyne Road
Lucknow-226018

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

यह प्रकाशन वास्तव में वह तक़रीर है जो २, मई सन् १९७५ ०० को इस्लामिक स्टडी सर्किल के तत्वाधान में मौलाना अबुल हसन अली ादवी ने गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल, लखनऊ में की थी। श्रोताओं में लखनऊ ; पढ़े लिखे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों थे। हाल खचा खच भरा थ और ासके बाहर दूर तक लोग लगभग डेढ़ घण्टे तक पूरी तनमयता के साथ ाकरीर सुनते रहे।

व्याख्यान का विषय था कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ललाहु ालैहि व सल्लम सारे जहांन के लिए रहमत हैं और आपका मानव जाति पर ड़ा अहसान है। तक़रीर उर्दू में 'मोहसिने आलम' और अंग्रेजी में 'MERCY 'OR THE WORLDS' के नाम से पहले प्रकाशित हो चुकी है। और अब हां उसका मुख्य अंश 'जग के मोहसिन' के नाम से हिन्दी में प्रकाशित किया ा रहा है। आशा है हिन्दी भाषी , भाई बहनों के लिए यह प्रकाशन उपयोगी ाद्ध होगा

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें इसमें कही गयी बातों को दिलों उतारने तथा उन्हें व्यवहार में लाने की तौफ़ीक़ दे।

ानुवादक

हलचौरी (चमोली)
बी-उल-अव्वल १४०२ हिज्री
नवरी १९८२ ई०।

www.abulhasanalinadwi.org

जग के मोहसिन

छठी शताब्दी ईस्वी में पूरी मानव-जाति आत्म हत्या पर आमादा नहीं कमरबस्ता नज़र आती है। जेसे उसने आत्म हत्या करने की कसम खाइ हैं अललाह ने इस वस्तुस्थिति का कुरआन मजीद में स्पष्ट चित्रण इस प्रकार किया है:-

अनुवाद:"और खुदा की उस मेहरबानी को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उलफत डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई भाई हो गये। और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे तो खुदा ने तुम को उससे बचा लिया।"

(सूरः आले इमरान-१०३

इतिहासकार और सीरत निगार अज्ञानता के उस युग की सही तस्वी प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे हैं क्यों कि साहित्य व शब्दकोष उनका साथ नहीं देते। स्थिति इतनी गम्भीर थी कि लेखनी उसका वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करने का सामर्थ नहीं रखती। इतिहासकार इसका हक़ केसे अदा कर सकते हैं अज्ञानता के युग में जिसमें अल्लाह के रसूल स० का अभ्युदय हुआ, क्या एक या दो कौमों के बिगाड़ और पतन की समस्या थी, खाली बुतपरस्ती का मसला था, नैतिक अपराधों का मसला था, मदिरापान, जुआबाजी, भोग विलास, अधिकारों के हनन, अत्याचार व अन्याय, आर्थिक शोषण, जाबिर हुकूमतों जालिमाना नेज़ाम और अन्यायपूर्ण कानून का मसला था! क्या समस्या यह थी कि किसी मुल्क में बाप अपनी नवजात बच्ची को जिन्दा गाड़ देता था। समस्

www.abulhasanalinadwi.org

यह थी कि इन्सान इन्सानियत को ख़ाक में मिला रहा था। समस्या यह नहीं थी कि अरब के कुछ पत्थर दिल लोग अपनी मासूम बच्चियों को झूठी शर्म और काल्पनिक अपमान से बचने के लिए एक स्वरचित भय और ज़ालिमाना चलन के कारण अपने हाथों ज़मीन में ज़िन्दा दफ़न कर देना चाहते थे। समस्या यह थी कि वसुन्धरा अपनी पूरी नसल को जिन्दा दफ़न करना चाहती थी।

समस्या किसी एक मुल्क या क़ौम की भी नहीं थी। मसला इनसानियत की क़िस्मत का था, मानव जाति के भविष्य का मसला था। यदि कोइ कलाकार ऐसी तस्वीर पेश करे जिसमें दिखाया गया हो कि मानव-जाति का नेतृत्व एक इन्सान कर रहा है, एक सुन्दर प्रतिमा, एक स्वस्थ व बलवान शरीर जो इश्वर की रचना का बेहतरीन नमूना है, जिसमें आदम का नाम जिन्दा और उसका सिलसिला कायम हे जिसे फरिश्ते हसद की निगाह से देखते हे, जिसके लिए सृष्टि की रचना की गई, जिसके सर पर खुदा ने बादशाही का ताज रखा और जिसके कारण यह धरती वीरान नहीं गुलजार है। इस इन्सान के सामने आग का एक समन्दर है, एक अत्यन्त भयावह खन्दक है जिसकी कोई थाह नहीं वह इन्सान इसमें छलाँग लगाने के लिए तेयार खड़ा है, उसके पैर उठ चुके हैं, और वह कूदने ही वाला है एक क्षण की देर है कि वह उसकी अन्धेरियों में गायब हो जायेगा। अगर उस युग की ऐसी तस्वीर खींची जाये तो कुछ हद तक उस वस्तुस्थिति का अन्दाज़ा हो सकता है और आपके अभ्युदय के समय छठी शताब्दी ईस्वी में पाई जाती थी। और इसी हक़ीक़त को बयान करने के लिए फ़रमाया गया है:-

अनुवादः **"और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे, खुदा ने तुम को उससे बचा लिया"**

अल्लाह के रसूल स० ने इसी बात को एक उपमा देकर बयान किया है आपने फ़रमाया "मेरी इस दावत व हिदायत (अहवान व मार्ग दर्शन) की

www.abulhasanalinadwi.org

मिसाल जिसके साथ मुझे दुनिया में भेजा गया है, ऐसी है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलाई, जब उसकी रोशनी आस-पास फैली तो वह परवाने और कीड़े जो आग पर गिरा करते हैं, हर तरफ़ से उमंड़ कर उसमें कूदने लगे, इसी तरह से तुम आग में गिरना और कूदना चाहते हो, और मैं तुम्हारी कमर पकड़कर तुम को उससे बचाता और अलग करता हूँ"।

वास्तव में असल मसला यही था कि इन्सानियत की नाविका को सलामती के साथ पार लगाया जाये। जब इन्सान अपने सही मूड में आ जायेगा जीवन में सन्तुलन पेदा हो जायेगा तो उन सब रचनात्मक, कल्याणकारी, ज्ञानात्मक, साहित्यिक तथा विकास के प्रयासों का दौर आयेगा जिनकी क्षमता विभिन्न लोगों और मानवता के हितैषियों में पाई जाती है। वास्तव में सारी दुनिया पैग़म्बरों की एहसानमन्द है कि उन्होंने मानव जाति को उन ख़तरों से बचा लिया जो उसके सर पर नंगी तलवार की तरह लटक रहे थे। दुनिया की कोई चीज़ उनके एहसान से खाली नहीं। सच तो यह है कि दुनिया का अस्तित्व व विकास पैग़मबरों के ही प्रयास का नतीजा है इन्सानों ने अपने हाव-भाव से कई बार यह एलान किया कि अब उनकी उपयोगिता समाप्त हो गई और अब वह दुनिया के लिए कोई उपादेयता नहीं रखते। उन्होंने अपने ख़िलाफ़ खुदा की अदालत में खुद नालिश की और गवाही दी, उनकी मिसिल तैयार थी और वह अपने को बड़ी से बड़ी सज़ा बल्कि मौत की सज़ा का भागीदार साबित कर चुके थे।

जब सभ्यता अपनी सीमा से परे निकल जाती है, छल नैतिक मूल्यों का पतन हो जाता है, जब इन्सान अपने स्वार्थ और लोलुप्ता की पूर्ति के सिवा हर उद्देश्य और हर हक़ीक़त को भुला देता है, जब उसके पहलू में इन्सान के दिल के बजाय भेड़िये और चीते का दिल पैदा हो जाता है, जब उसके शरीर में एक फ़र्जी आमाशय और एक विध्वंसात्मक प्रवृत्ति जन्म लेती है, जब दुनिया पर

www.abulhasanalinadwi.org

जुनून का दौरा पड़ता है, तो प्रकृति उसको सज़ा देने और उसके जुनून का नशा उतारने के लिए नये-नये नश्तर (FERULE) पैदा करती है:-

करती है मलूकियत अन्दाज़े जुनूं पैदा,
अल्लाह के नशतर हैं तैमूर हो या चँगेज़

आप "मलूकियत" के शब्द को "सभ्यता" से बदल दीजिये क्योंकि सभ्यता का बिगाड़ "मलूकियत" (सत्ता) के जुनून से ज्यादा ख़तरनाक व व्यापक होता हैं। एक कमज़ोर सा मरीज़ अगर पागल हो जाता है तो मुहल्ले की नींद हराम कर देता है। आप कल्पना कीजिये कि जब मानव जाति पागल हो जाये, जब इन्सानियत का मिज़ाज खराब हो जाये तो इसका क्या इलाज है?

अज्ञानता के युग में सभ्यता सिर्फ बिगड़ी ही नहीं थी उसमें सड़ान पैदा हो गई थी, उसमें कीड़े पड़ गये थे। इन्सान-इन्सान का शिकारी बन गया था। उसे किसी इन्सान की तड़प, उसकी कराह में वह मज़ा आने लगा था जो अत्यन्त स्वादिष्ट खानों और मनमोहक दृष्यों में नहीं आता था। आप रोम का इतिहास पढ़े जिसकी विजय, सुष्यवस्था, संविधान और सभ्यता के दुनिया में डंके बजे। योरोप का इतिहासकार "लेकी" अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ दी योरोपियन मारल्स" में लिखते हैं:-

" रोमवासियों के लिए सबसे ज्यादा दिलचस्प, रोचक और मस्त कर देने वाला नज़ारा वह होता था जब आपस में तलवार की लड़ाई अथवा खूंखार जानवरों की लड़ाई में हारे हुए और घायल ग्लेडीयेटर (तलवार से लड़ने वाला योद्धा) की जान निकल रही होती। उस समय रोम के खुश बास और ज़िन्दा दिल तमाशाई इस रोचक दृष्य को देखने के लिए एक दूसरे पर गिरे पड़ते और पुलिस को भी इन को कन्ट्रोल में रखना सम्भव न होता "!

रोम में उन दिनों एक खेल प्रचलित था जिसमें मनुष्य को जानवरों से लड़ने के लिए बाध्य किया जाता था। मनुष्य के पत्थर दिल होने की इससे

www.abulhasanalinadwi.org

ख़राब मिसाल नहीं मिलती। इस खेल का सम्बन्ध समाज के उच्च वर्ग के लोगों से था। इतिहासकार लेकी इन खेलों की लोकप्रियता का वर्णन करते हुए लिखता है:-

"इस खेल की लोकप्रियता कदापि आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि आकर्षण के जितने पक्ष इसमें एकत्र हो गये थे उतने किसी अन्य खेल में न थे। चमचमाता अखाड़ा, गोटे फटे के वस्त्र धारणा किये धनाढ्य लोग, तमाशाईयों की आपार भीड़, उनका जोश, आशाओं से बंधी पूर्ण शान्ति अस्सी हजार मुखों से एक साथ प्रशँसा की गूंज से शहर क्या शहर के बाहर तक की बस्तियां गूंज उठतीं। लड़ाई का घड़ी-घड़ी रंग बदलते रहना, अद्वितीय साहस का प्रदर्शन इनमें से हर बात कल्पना शक्ति को झिंझोड़ने के लिए काफ़ी है।"

इन ज़ालिमाना तफ़रीहों को रोकने के लिए आदेश जारी किये गये किन्तु यह बाढ़ इतनी शक्तिशाली थी कि कोई बान्ध इसे रोक नहीं सकता था।

अस्तु असल समस्या यह थी कि ज़िन्दगी की चूल अपनी जगह से हट गई थी, इन्सान इन्सान नहीं रहा था। इन्सानियत का मुक़दमा अपने अन्तिम चरण में खुदा की अदालत में पेश था। इन्सान अपने ख़िलाफ़ गवाही दे चुका था। इस हालत में अल्लाह ने मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लाल्लहु अलैहि व लम को दुनिया में भेजा और फ़रमाया:-

अनुवाद: "और (ऐ मुहम्मद) हमने तुमको तमाम जहान के लिए रहमत बना कर भेजा है "।

(सूरः अँबिया - १०७)

वास्तविकता यह है कि क़यामत तक का प्रत्येक युग अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० के अभ्युदय, आहान और सफल प्रयास के हिसाब में है। आप का पहला काम यह था कि आपने उस तलवार को जो मानव जाति के सर पर

www.abulhasanalinadwi.org

लटक रही थी और कोई घड़ी भी उसके सर पर गिरकर उसका काम तमाम कर दे, उस तलवार को हटा लिया और उसे वह उपहार दिये जिन्होंने उसे नया जीवन, नया हौसला, नयी ताक़त, नयी इज़्ज़त और नयी दिशा प्रदान की और इनकी बरकत से मानव-सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान सच्चाई और प्रेम तथा मानवता के नव-निर्माण का एक युग प्रारम्भ हुआ। हम यहाँ पर आपके उन उपकारों का वर्णन करते हैं जिन्होंने मानव-जाति का मार्ग-दर्शन करने तथा मानवता के उत्थान में बुनियादी और नेतृत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और जिनकी बदौलत एक नयी दुनिया ने जन्म लिया।

आप का सबसे बड़ा एहसान (उपकार) यह है कि आपने दुनिया को तौहीद १ का उपहार दिया इससे अधिक क्रान्तिकारी, जीवन-दायक और युग प्रवर्तक विश्वास दुनिया को न पहले कभी मिला है और न क़यामत तक कभी मिल सकता है। यह मानव जिसको साहित्य, दर्शन शास्त्र और राजनीति में बड़े-बड़े दावे हैं और जिसने क़ौमों व मुल्को को अनेक बार ग़ुलाम बनाया, जल, थल, आग और हवा पर हुकूमत की , पत्थर में फूल खिलाये, पहाड़ों को काट कर दरिया बहाये और जिसने कभी-कभी खुदायी का भी दावा किया, वह अपने से कहीं ज़्यादा असहाय, निकृष्ट, अचल और अटल, बेजान व मुर्दा और कभी-कभी स्वरचित चीज़ों के सामने झुकता था, उनसे डरता और उनकी खुशामद करता था। वह पहाड़ो, दरियाओं, पेड़ पौधों, जानवरों, भूत-प्रेत व शैतानों, चाँद व सूरज के सामने ही नहीं बल्कि कीड़े मकोड़ों के सामने नतमस्तक होता था। उसकी आशायें इन्हीं से बन्धी होती थीं वह इन्ही से डरता था। इसके फलस्वरूप वह कायरता मानसिक उलझनों अविश्वास तथा काल्पनिक भय से ग्रसित रहता था। आपने उसको ऐसे शुद्ध एवं सरल तथा जीवनदायक

१- ईश्वर को अपने अस्तित्व तथा गुणों के साथ एक मानना।

www.abulhasanalinadwi.org

तौहीद के अक़ीदा को शिक्षा दी जिससे वह खुदा के अलावा जो सृष्टि का निर्माता है हर एक से आज़ाद, निडर और निश्चिन्त हो गया। उसमें एक नई शक्ति, नया सामर्थ, नया साहस और नयी एकता उत्पन्न हुई। उसने केवल खुदा को सर्वशक्तिमान, हमारी तमाम ज़रूरतों को पूरा करने वाला और नफ़ा नुक़सान पहुंचाने वाला, समझाना शुरू किया इस नयी खोज से उसकी दुनिया बदल गयी। वह हर प्रकार की गुलामी बन्दगी, बेजा डर तथा हर प्रकार की खींच तान से सुरक्षित हो गया। उसे अनेकता में एकता नज़र आने लगी वह अपने को सर्वोत्कृष्ट प्राणी सारी दुनिया का सरदार, कर्ता-धर्ता और केवल खुदा का शासित व आज्ञा पालक समझने लगा। इस प्रकार मानव की गरिमा व महिमा जिससे पूरी दुनिया वंचित हो चुकी थी पुनः स्थापित हुई।

मुहम्मद स० के अभ्युदय के बाद चारों ओर से तौहीद की गूंज आने लगी दुनिया की सारी विचार धाराओं पर उसका कुछ न कुछ असर पड़ा। वह बड़े-बड़े धर्म जिनकी नस-नस में शिर्क व द्वैतवाद का अक़ीदा रच बस गया था। किसी न किसी रूप में यह एलान करने पर मजबूर हो गये कि खुदा एक है। वह शिर्क की ऐसी विवेचना करने लगे जिससे उन पर शिर्क का इलज़ाम न आये और वह इस्लाम के तौहीद के अक़ीदा से कुछ न कुछ मिलता हुआ नज़र आये। उनको शिर्क की सारी व्यवस्था हीनता की भावना से ग्रसित हो गई।

आपका दूसरा क्रान्तिकारी और महान उपकार मानव जाति की एकता की वह परिकल्पना है जो आपने दुनिया को दी। मानव जाति-बिरादरी तथा ऊँचे नीचे वर्गो में बँटा हुआ था और उनके बीच इन्सानों व जानवरों, आक़ाओं व गुलामों तथा भक्त व भगवान का अन्तर था। एकता व समता की कोई परिकल्पना न थी। आपने शताब्दियों के बाद पहली बार यह चकित कर देने वाली तथा क्रान्तिकारी घोषणा कीः-

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवादः "लोगो! तुम्हारा परवर दिगार एक है, और तुम्हारा बाप भी एक है, तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से बने थे अल्लाह के नज़दीक तुम मे से सबसे अधिक सम्मान का पात्र वह है जो तुममें सबसे ज्यादा पाक बाज़ है। किसी अरबी को अज़मी (गैर अरब) पर फज़ीलत नहीं मगर तक़वा (ख़ुदा से डरना) की बिना पर"।

यह वह शब्द हैं जिन्हें अल्लाह के रसूल स० ने अपने आखिरी हज में एक लाख चौबीस हज़ार की विशाल सभा में कहे थें। इनमें दो एकताओं का एलान किया गया है और यही वह दो आधार शिलायें हैं जिन पर मानव जाति की वास्तविक एकता का महल खड़ा किया जा सकता है और जिसकी छाया में मनुष्य को सुख तथा शान्ति प्राप्त हो सकती है। यह दो एकतायें क्या है? एक मानव-जाति के सृष्टा एवं निर्माता की एकता। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से दोहरा रिश्ता रखता है एक आध्यात्मिक और प्रत्यक्ष वह यह कि सब इन्सानों और जहानों का रब (पालनहार) एक है, दूसरा शारीरिक और अप्रत्यक्ष वह यह कि सब इन्सान एक बाप की औलाद है।

जिस समय यह एलान किया गया था उस समय दुनिया इसे सुनने के मूड में न थी। यह एलान उस समय की दुनिया के लिये एक भूचाल से कम न था। कुछ चीज़े ऐसी होती हैं जो प्रत्यक्ष नहीं अप्रत्यक्ष रूप से सहन की जा सकती हैं। बिजली का यही हाल है कि किसी कुचालक की मदद से उसको छू लेते हैं किन्तु बिजली के खुले तार को कोई छू ले तो छूते ही उसका काम तमाम हो जाता हैं। आज ज्ञान विज्ञान तथा मानव चिन्तन के विकास की उन सीढ़ियों ने जो इस्लाम की दावत, इस्लामी समाज की स्थापना और उसके सुधारकों के प्रयासो से तय हुई है इस क्रान्तिकारी एलान को अत्यन्त व्यापक बना दिया है संयुक्त राष्ट्र संघ के स्टेज से लेकर जिसने मानव अधिकार का चार्टर प्रकाशित

www.abulhasanalinadwi.org

किया प्रत्येक लोकतन्त्र और प्रत्येक संस्था की ओर से समान मानव अधिकारों का एलान किया जा रहा है और कोई इस को सुनकर आश्चर्य चकित नहीं होता किन्तु एक समय था जब विभिन्न वर्णो और वंशजों के दिलों में सर्वोपरि होने की भावना घर कर गई थी और अनेक पीढ़ियों और वँशजों का सम्बन्ध खुदा और सूरज चाँद से जोड़ा जाता था।

कुरआन मजीद में आया है कि यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम खुदा की लाडली और चहेती औलाद की तरह हैं। मिस्र का फ़िरऔन अपने को सूरज देवता का अवतार कहता था , हिन्दुस्तान में सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी खानदान मौजूद थे। ईरान के बादशाह जिनहें किसरा या खुसरों कहा जाता था कहते थे कि उनकी शिराओं में खुदाई खून है। ईरानवासी उन्हें इसी नज़र से देखते थे। उनका विश्वास था कि इन जन्मजात बादशाहों की घुट्टी में कोई पवित्र आसमानी चीज़ शामिल है। क्यानी सिलसिले के आखिरी बादशाह "यज़्द गर्द" का नाम बताता है कि वह और ईरानी उनको खुदा के कितने निकट और सहचर्य समझते थे। चीन के लोग अपने बादशाह 'ख़ता प्रथम' को आसमान का बेटा समझते थे। उनका विश्वास था कि आसमान नर और धरती मादा है। और इन दोनों के मेल से सृष्टि की रचना हुई है और बादशाह 'ख़ता प्रथम' इस जोड़े का पिलौंठा बेटा है। अरब अपने अलावा सारी दुनिया को अजमी अर्थात गूंगा और बेजुबान कहते थे। उनका सर्वोच्च क़बीला कुरैश आम अरबों से अपने को ऊँचा समझता था और इसी कारण हज के अवसर पर भी अपना विशेष अधिकार कायम रखता था।

ऐसे वातावरण में कुरआन ने एलान किया:-

अनुवादः "लोगों! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये ताकि एक दूसरे को पहचानों

www.abulhasanalinadwi.org

(और) खुदा के नज़दीक तुममें इज्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है"।

(सूरः अलहुजरात- १३)

और कुरआन की एक ऐसी सूरः में जो उसका आमुख और सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली सूरः है, कहा गया है:-

अनुवादः "सब तारीफ़ अल्लाह की है जो सारे जहानों का पालनहार है"

मानव जाति पर आपका तीसरा एहसान मानवता का सम्मान और मनुष्य के प्रति आदर की वह भावना है जो आपने मानव जगत को भेंट किया। जिस समय इस्लाम का अभ्युदय हुआ उस समय मनुष्य से अधिक निकृष्ट कोई नहीं था। मानव का अस्तित्व एकदम बेक़ीमत और निरर्थक हो कर रह गया था। कभी-कभी पालतू जानवर, कुछ पवित्र "प्राणी" कुछ वृक्ष जिनके साथ कुछ अक़ीदे जुड़ गये थे, मानव से कहीं अधिक क़ीमती श्रद्धा के पात्र और सुरक्षा के योग्य समझे जाते थें। उनके लिए इन्सानों की जाने निःसंकोच ली जा सकती थीं और उनके खून तथा गोश्त के चढ़ावे चढ़ाये जा सकते थे। आज भी बड़े-बड़े विकासशील देशों में इनके नमूने देखो जा सकते हैं अल्लाह के रसूल स० ने मानव के मन मस्तिष्क में यह बात बिठा दी कि मनुष्य इस सृष्टि का सबसे ज्यादा कीमती, प्रेम व श्रद्धा का पात्र, और सुरक्षा का अधिकारी प्राणी है। आपने मनुष्य को इतना उठाया कि उससे ऊपर सिर्फ सृष्टि का निर्माता रह जाता है। कुरआन ने एलान किया कि वह खुदा का नायब है सारी दुनिया और यह सब कुछ उसी के लिए पैदा किया गया है। अल्लाह फ़रमाता है:-

अनुवादः "वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो इस ज़मीन पर है"। (सूरः बक़ २९)

www.abulhasanalinadwi.org

वह सर्वोत्कृष्ट प्राणी और जग का मुखिया है।

अनुवादः "और हमने बनी आदम को इज़्ज़त दी और उनको जंगल और दरिया में सवारी और पाकीज़ा रोज़ी दी और अपनी बहुत सी मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत दी"।

(सूरः बनी इस्राईल- ७०)

इससे अधिक उसके महत्व को और क्या सराहा जा सकता है कि साफ कह दिया गया कि दुनिया (ख़ल्क) अल्लाह का कुटुम्ब है वासुधैव कुटुम्बकम्। और खुदा को अपने भक्तों में सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके कुटुम्ब के साथ अच्छा व्यवहार करे और उसको आराम पहुंचाये। एक पवित्र हदीस में फ़रमाया गया- 'अल्लाह ताआला क़यामत के दिन कहेगा' "ऐ आदम की औलाद! मैं बीमार हुआ था तू मुझे देखने नहीं आया" बन्दा कहेगा "परवर दिगार मैं तेरी अयादत क्या कर सकता हूं तू तो सारे जहानों का पालन हार है"। खुदा कहेगा- "क्या तुझे मालूम नहीं हुआ, मेरा अमुक भक्त बीमार था तू उसकी अयादत को नहीं गया। तू अगर उसकी अयादत को जाता तो मुझे उसके पास पाता"। फिर फ़रमाया जायेगा "ऐ आदम की औलाद! मैने तुझसे खाना माँगा तूने मुझे खाना नहीं दिया"। बन्दा कहेगा- "परवर दिगार! मैं तूझे कैसे खाना खिला सकता हूं तू तो सारे जहान का पालन हार है। इरशाद होगा "क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरे अमुक भक्त ने तुझसे खाना मांगा तूने उसे नहीं खिलाया तू अगर उसे खाना खिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता"। फिर इरशाद होगा- "ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे पानी मांगा तो तूने पानी नहीं पिलाया" बन्दा कहेगा "ऐ रब! मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूं तू तो सारे जहान का पालनहार है। इरशाद होगा "तुझसे मेरे अमुक बन्दे ने पानी मांगा था तूने उसे पानी नहीं दिया, क्या तू नहीं जानता था कि अगर तू उसको पानी

www.abulhasanalinadwi.org

पिलाता तो तू मुझे उसके पास पाता"। एक ऐसे मज़हब में जो साक्षात तौहीद हो क्या मानवता की बुलन्दी और मनुष्य के प्रति प्रेम का इससे बढ़कर एतराफ़ (स्वीकृति) व एलान पाया जा सकता हैं। और क्या दुनिया के किसी अन्य मज़हब में इन्सान को यह स्थान दिया गया है? आपने खुदा की रहमत के लिए इन्सानों पर रहमत (दया) को शर्त और उसका सबसे बड़ा ज़रिया बताया और फ़रमाया, "रहम करने वालों पर रहमान की रहमत होती है अगर तुम धरती के वासियों पर रहम खाओगे तो वह जो आसमान पर है वह तुम पर रहम करेगा"। हाली ने इसी हदीस के भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है:-

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मी पर खुदा मेहरबां होगा अर्शेबरीं पर

आप विचार करें कि मानव एकता की बात दिलों में बिठाने तथा मानव के प्रति आद की भावना जागृत करने के लिये जब यह प्रयास नहीं किया गया था उस समय इन्सान का क्या हाल रहा होगा। एक व्यक्ति की तुच्छ कामना का मूल्य हज़ारों इनसानों से अधिक या बादशाह उठते थे और मुल्कों के मुल्कों का सफाया कर देते थे। सिकन्दर उठा और जैसे कोई कबड्डी खेलता है, हिन्दुस्तान तक चला आया और क़ौमों व तहज़ीबों के चिराग़ गुल कर दिये सीज़र उठा और इन्सानों का इस तरह शिकार खेलना शुरू किया जैसे जंगली जानवरों का शिकार खेला जाता है। हमारे समय में भी दो विश्वव्यापी युद्ध हुए जिन्होंने लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतार दिया। और यह केवल राष्ट्रीयता के अहंकार, राजनीतिक चौधराहट, सत्ता की लोलुपता अथवा व्यापारिक मंडियों पर अधिकार करने की भावना के कारण हुआ।

आपका चौथा वरदान यह है कि आपके अभ्युदय के समय मानवजाति के अधिकांश लोग खुदा की रहमत से निराश हो चुके थें। यह स्थिति पैदा करने में एशिया के कुछ प्राचीन धर्म तथा मध्य पूर्व व योरोप के परिवर्तित ईसाई धर्म ने समान भूमिका निभाई। हिन्दुस्तान के प्राचीन धर्मो ने "आवागमन" के

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वास के जरिये जिसमें इन्सान के इरादा व अख़्तियार को कदापि दख़ल नहीं है और जिसके अनुसार हर इन्सान को अपने पूर्व जन्म के कृत्यों और ग़लतियों की सज़ा भुगतनी जरूरी है, और ईसाईयत ने इन्सान के पैदाइशी गुनहगार होने और उसके लिये हज़रत मसीह के कफ़्फारा (प्रायश्चित) बनने की ज़रूरत के अक़ीदा के नतीजे में उस समय के सभ्य संसार के लाखों करोड़ों लोगों को जो इन धर्मो के अनुयायी थे, अपने आप से बदगुमान और अपने भविष्य व खुदा की रहमत से निराश कर दिया था।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूरी ताकत व सफाई से एलान किया कि मानव प्रवृत्ति एक सादा तख़्ती के समान है जिस पर पहले से कुछ नहीं लिखा जा सकता है। इन्सान अपने अच्छे बुरे काम का स्वयं जिम्मेदार है, अपनी दुनिया व आख़ीरत वह अपने कर्मो से स्वयं बनाता या बिगाड़ता है। वह किसी दूसरे के कर्म का ज़िम्मेदार या उत्तरदायी नहीं है। कुरान मजीद ने बार-बार एलान किया कि आख़िरत (परलोक) में कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकेगा। और यह कि उसके हिस्से में उसी की कोशिश और उसके प्रतिफल आने वाले हैं। इन्सान की कोशिश का नतीजा ज़रूर ज़ाहिर होगा और उसको उसका भरपूर बदला मिलेगा।

अनुवादः "यह कि कोई व्यक्ति दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वह कोशिश करता है और यह कि उसकी कोशिश देखी जायेगी फिर उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा"।

(सूरः नज्म-३८-४१)

इस एलान से मनुष्य का अपने आप पर और अपनी निहित शक्तियों पर वह आत्म विश्वास बहाल हो गया जो एकदम डगमगा गया था। वह नये

www.abulhasanalinadwi.org

विश्वास और नये संकल्प के साथ अपनी मानवता की तक़दीर चमकाने के लिए कार्यरत हो गया।

आपने गुनाहों और ग़लतियों को एक अस्थायी हालत क़रार दिया जिससे इन्सान कभी-कभी अपनी, नादानी संकुचित दृष्टिकोण तथा शैतान के बहकावे में आकर ग्रसित हो जाता है। अच्छे कर्मो को पसन्द करना और अपना क़ुसूर स्वीकार करना व नदामत (पश्चाताप) मानव स्वभाव का असल तक़ाज़ा और इन्सानियत का जौहर है, अपनी ग़लती स्वीकार करना, उस पर पश्चाताप करना, खुदा के सामने रो धोकर अपने क़सूर को माफ़ करा लेना और भविष्य में ऐसी ग़लती न करने का संकल्प करना इन्सान की शराफ़त और आदम की मीरास (पूँजी जो उत्तराधिकार में मिली हो) है। आप ने दुनिया के निराश और गुनाहों के दलदल में गले तक डूबे हुए इन्सानों पर तौबा (प्रायश्चित) का द्वार खोला और इसका ऐसा प्रचार किया कि आपका एक नाम "नबी उत्तौबा (तौबा का पैगम्बर) पड़ गया। आपने तौबा को एक मजबूरी के रूप में प्रस्तुत नहीं किया बल्कि आपने उसका ऐसा गुणगान किया और उसे इतना ऊँचा उठाया कि वह उच्च कोटि की इबादत और ईश्वर के सान्निध्य का ऐसा ज़रिया बन गया कि बड़े-बड़े मासूम व निष्पाप भक्तों को रश्क आने लगा। क़ुरआन मजीद में अल्लाह ताआ़ला इरशाद फ़रमाता है:-

अनुवादः "कह दीजिये ऐ मेरे वह बन्दों जिन्होनें अपने हक़ में ज़्यादती की है अल्लाह की रहमत से मायूस (निराश) न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाह माफ़ कर देता है बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है"।

(सूरः ज़मर-५३)

www.abulhasanalinadwi.org

एक दूसरी जगह गुनाहों से तौबा वालों का उल्लेख करते हुए फ़रमाया गया है:-

अनुवादः "और अपने परवर दिगार की बखशिश और बहिश्त (स्वर्ग) की तरफ़ लपको जिसकी लम्बाई आसमान व जमीन के बराबर है और जो (खुदा से) डरने वालों के लिए तैयार की गयी है। जो खुशहाली और तँगी में (अपना माल खुदा की राह में) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते हैं और लोगों के कसूर माफ़ करते हैं। और खुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। और जब वह खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो खुदा को याद करते और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं। और खुदा के सिवा गुनाह बख्श भी कौन सकता है। और जानबूझ कर अपने किये पर अड़े नहीं रहते। ऐसे लोगों का बदल परवरदिगार की तरफ से अमा और बाग़ है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और वह इसमें हमेशा रहेंगें और अच्छे काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है।"

(सूरेः आले इमरान १३३-१३६)

इसमें भी आगे बढ़कर कुरआन मजीद की सूरः तौबा की शुरुआत ही "तायबों" (तौबा करने वालो) से की गई और फरमाया गयाः-

अनुवादः "तौबा करने वाले इबादत करने वाले, हम्द करने वाले बेतअल्लुक़ रहने वाले, रूकू करने वाले, सज्दा करने वाले, नेक कामों का अम्र करने वाले, और बुरी बातों से मना करने वाले, खुदा के हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और (ऐ पैगम्बर) मोमिनों को (स्वर्ग की) खुशख़बरी सुना दो"।

(सूरः तौबा ११२)

www.abulhasanalinadwi.org

इस सम्मान और विश्वास का एक ज्वलन्त उदाहरण यह है कि जब कुरआन मजीद में उन तीन साहाबा की तौबा की कबूलियत का एलान किया गया जो तबूक के युद्ध के अवसर पर बिना किसी उचित कारण के मदीना में रह गये थे तो उनका उल्लेख करने से पहले स्वयं पैगम्बर और उन मुहाजिरीन व अन्सार का उल्लेख किया गया जिनसे इस अवसर पर कोई कोताही (चूक) नहीं हुई थी। ताकि उन तीन पीछे रह जाने वालों को अपनी तनहाई और पिछड़े पन का एहसास न हो और वह हीनता की भावना तथा लोगों की टोंक से बरी हो जायें। तौबा करने वालों की मक़बूलियत और उन्हें ढ़ारस दिलाने की ऐसी मिसाल अन्यत्र मिलना कठिन है। सूरः तौबा में है:-

अनुवादः "बेशक खुदा ने पैगम्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरीन व अन्सार पर जो बावजूद इसके कि इनमें से कुछ के दिल फिर जाने को थे, मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमाई। बेशक वह इन पर अत्यन्त शफ़क़त करने वाला और मेहरबान है और तीनों पर भी जिनका मामला स्थगित किया गया था। यहाँ तक कि जब ज़मीन बावजूद विशालता के उन पर तंग हो गई। और उनकी जाने भी उन पर दूभर हो गई और उन्होंने जान लिया कि खुदा (के हाथ) से स्वयं उसके सिवा कोई पनाह नहीं है। फ़िर खुदा ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक खुदा तौबा कबूल करने वाला मेहरबान है"।

(सूरः तौबा ११७-११८)

इसके अलावा एक सिद्धान्त के रूप में इसका एलान किया कि अल्लाह की रहमत हर चीज़ पर हावी है। कुरआन में है:-

अनुवाद "मेरी रहमत हर चीज़ पर हावी है"। (सूरः अलए राफ़१५६)

www.abulhasanalinadwi.org

और हदीस कुदसी में है:-

अनुवादः "मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है"।

कुरआन निराश को कुफ्र, जेहालत व गुमराही का पर्यायवाची ठहराता हैं। एक जगह एक पैगम्बर की ज़बान से कहलवाया गया है:-

अनवादः "अल्लाह की रहमत से वही लोग निराश हो सकते हैं जो खुदा के मुनकिर (नास्तिक) और उसकी ज़ात व सिफ़ात से ना आशना (अनभिज्ञ) हैं"।

(सूरः यूसुफ ८७)

दूसरी जगह एक दूसरे पैगम्बर का कथन नक्ल किया गया है:-

अनुवादः "अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा कौन निराश हो सकता है"।

(सूरः अलहिजर ५६)

इस प्रकार अल्लाह के रसूल (स०) ने तौबा के महत्व और खुदा की रहमत की व्यापकता का एलान व प्रचार करके निराश और खुदा के ग़जब से सहमी और भयभीत मानवता को नव जीवन का संदेश दिया। उसके मरणासन्न शरीर में नवज्योति जगायी उसके घाव पर मरहम रखा और उसे धरा की धूल से उठा कर सम्मान, आत्म विश्वास तथा ईश्वर में आस्था की चरम सीमा पर पहुंचा दिया।

आपका पांचवा महान एवम् अविस्मरणीय उपकार दीन व दुनिया के सामंजस की परिकल्पना है। मनुष्य के कर्म और व्यवहार तथा उसके प्रतिफल मूलतः मानव की मनः स्थिति, कर्म के प्रेरक तत्वों एवम् उसके उद्देश्यों पर

www.abulhasanalinadwi.org

निर्भर है। इस्लाम में इसे एक छोटे से सरल किन्तु सारगर्भित शब्द "नीयत" से व्यक्त किया गया है। इस्लाम में न कोई चीज़ दुनिया है न कोई चीज़ दीन! इसके नज़दीक सवच्छ मन से खुदा की मर्जी की चाह और उसके आदेशों के अनुपालन की भावना एवं संकल्प से बड़े से बड़ा सांसारिक कर्म यहां तक कि शासन, युद्ध, दुनिया के मज़े रोटी-रोज़ी कमाने के प्रयास, मनोरंजन के साधन, दाम्पत्य-जीवन सब उच्च कोटि की इबादत और अल्लाह के सान्निध्य का ज़रिया, बड़े से बड़ा ऋषि-मुनी बनने का माध्यम और ख़ालिस दीन बन जाता हैं। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी इबादत और दीन का काम जो अल्लाह की मर्ज़ी और भक्ति भावना से ख़ाली ही विशुद्ध सांसारिक और ऐसा कर्म कहा जायेगा जिस पर कोई सवाब और बदल नहीं है।

प्राचीन धर्मो ने जिन्दगी को दो खानों में और दुनिया को दो कैम्पों में बांट दिया था। दीन-दुनिया तथा धार्मिक लोग व सांसारिक लोग यह दो न केवल एक दूसरे से अलग-थलग थे बल्कि एक दूसरे से लड़ने मरने को तैयार रहते थे। उनके नज़दीक दीन व दुनिया एक दूसरे के विरोधी थे और जिसको इनमें से किसी एक को अपनाना हो उसके लिये दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद करना ज़रूरी था। कोई इन्सान एक समय में इन दोनों के साथ नहीं चल सकता था। खुदा को भुलाये बिना आर्थिक संघर्ष, धार्मिक नैतिक शिक्षा का परित्याग किये बिना शासन सन्यास धारण किये बिना धार्मिक (दीनदार) बनने की परिकल्पना ही नहीं थी। मानव आमतौर पर सहूलत और लज्ज़त को पसन्द करता है। दीन की ऐसी परिकल्पना जिसमें दुनिया को किसी जायज़ सहूलत, तरक्की व ताक़त की प्राप्ति की गुंजाइश न हो, बहुधा लोगों के लिए असहय और आग्रहय थी। फलतः दुनिया के सभ्य, विदवत सक्षम एवं व्यावहारिक लोगों की बड़ी संख्या ने अपने लिए "दीन" के बजाय "दुनिया" का चयन किया। वह हर प्रकार के धार्मिक उन्नयन से निराश होकर दुनिया की प्राप्ति और उसकी तरक्की में

www.abulhasanalinadwi.org

व्यस्त हो गया। दीन व दुनिया के इस विरोधाभास को एक धार्मिक और अकांटय सत्य समझकर मनुष्यों के विभिन्न वर्गो ने आमतौर पर मज़हब को खैर बाद (त्याग देना) कहा। "राजनीति" और "राज्य" ने कलीसा (गिरजाघर) से बगावत की और अपने को उसकी हर पाबन्दी से आज़ाद कर लिया। मानव बेनकेल और समाज निरकुँश होकर रह गया। दीन व दुनिया के इस बटवारे ने न केवल यह कि धर्म व आचरण के प्रभाव को सीमित व कमज़ोर और मानव जीवन को उसकी बरकत व रहमत से वंचित कर दिया बल्कि दुनियादारी व अधर्म का वह द्वार खोला जिसका सबसे पहले योरोप शिकार हुआ। फिर दुनिया के दूसरे राष्ट्र जो योरोप के प्रभाव में आये इससे कुछ न कुछ प्रभावित हुए। वर्तमान दुनिया की स्थिति जिसमें धर्म व आचरण का पतन अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है दीन व दुनिया के इसी अन्तर का नतीजा है।

अल्लाह के रसूल स० का यह महानतम कार्य और मानवता के लिए महान भेंट है कि आप पूर्णतः एकता के रसूल (रसूले वहदत) है। और एक ही समय "बशीर" (इस बात से अगाह करने वाला कि अच्छे काम का अच्छा नतीजा प्राप्त होगा) और "नजीर" (इस बात से आगाह करने वाला कि बुरे काम का बुरा नतीजा प्राप्त होगा) है। आपने दीन व दुनिया के भेद को समाप्त करके पूरे जीवन को इबादत में और पूरी वसुन्धरा को एक विशाल इबादतगाह में बदल दिया। दुनिया के लोगों को सद्दव्यवहार परोपकार, और अल्लाह की रज़ा के एक ही मोर्चे पर लाकर खड़ा कर दिया। यहाँ दुनिया के भेस में सन्त, राजाओं के भेस में ऋषि-मुनी, तलवार व तसबीह (माला) धारी, रात के इबादत गुज़ार और दिन के शहसवार नज़र आयेंगे।

आपका छटा उपकार यह है कि आप के अभ्युदय काल से पहले मानव अपने लक्ष्य से बेख़बर थी। उसको याद नहीं था कि उसे कहां जाना है? उसकी क्षमताओं का असल मैदान और उसकी कोशिशों का असल निशाना क्या है?

www.abulhasanalinadwi.org

उसने कुछ तुच्छ लक्ष्य बना लिये थे जिनकी प्राप्ति में उसकी क्षमता खर्च हो रही थीं। कामयाब या बड़ा इन्सान बनने का मतलब सिर्फ यह था कि मैं दौलतमन्द बन जाऊँ, ताक़तवर और हाकिम बन जाऊँ, बड़े से बड़े क्षेत्र और अधिक से अधिक इन्सानों पर मेरा शासन हो। लाखों लोग ऐसे थे जो बेल-बूटों रंग-रलियों, स्वादिष्ट खानों और पशु-पक्षियों की नक़ल से आगे नहीं सोच पाते थे। हज़ारों लोग ऐसे थे जिनकी सारी शक्ति अपने समय के धनवानों और राजा महाराजा की खुशामद करने में ख़र्च हो रही थी अल्लाह के रसूल स० ने मानव जाति के सामने उसकी वास्तविक मंज़िल लाकर खड़ी कर दी। आपने बताया कि मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य ईमान व यक़ीन के साथ अल्लाह को राज़ी करना और उससे राज़ी हो जाना है। अपनी निहित शक्तियों का विकास करना, इन्सानों की ख़िदमत करना, त्याग व तपस्या के ज़रिया खुदा की खुशनूदी हासिल करना और तरक्की की उस चरम सीमा तक पहुंच जाना जहां फ़रिश्ते भी नहीं पहुच सकते, इन्सान की कोशिशों का असल मैदान है।

आपके अभ्युदय के बाद दुनिया की ऋतु बदल गई। इन्सानों के मेजाज़ बदल गये दिलों में ईश-प्रेम की चिंगारी भड़की उनके अन्दर ईश-प्राप्ति की भावना जागी, उनको खुदा को राज़ी करने की एक धुन लग गई। जिस प्रकार पावस ऋतु में धरती में अँकुरण शक्ति, सूखी टहनियों में हरियाली पैदा हो जाती है, नयी-नयी कोंपलें निकलने लगती है और चारों ओर हरियाली दिखाई पड़ने लगती है। उसी प्रकार आपके अभ्युदय के बाद दिलों में नया उत्साह, मन में नयी भावना और तन में नयी लगन समा गयी। करोड़ों लोग अपने वास्तविक लक्ष्य की खोज के लिए निकल खड़े हुए। अरब व अजम, मिस्र व सीरिया, तुर्किस्तान, ईरान, ईराक व खुरासान, उत्तरी अफ़्रीका, स्पेन और हमारा मुल्क हिन्दुस्तान तथा पूर्वी द्वीप समूह अब इसी के मतवाले नज़र आते हैं। ऐसा मालूम होता है कि मानवता शताब्दियों की नींद सोते साते जाग उठी। आप

www.abulhasanalinadwi.org

इतिहास की पुसतकों का अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि लोगों के पास ईश्वर को पाने और उसे पहचानने के सिवा कोई काम ही न था। बस्ती-बस्ती, गाँव-गाँव बड़ी संख्या में ऐसे खुदा मस्त, त्यागी व तपस्वी लोग नज़र आते हैं जिन पर फ़रिश्ते भी रश्क करें उन्होंने दिलों की सर्द अंगेठियां गर्मा दीं, ईश-प्रेम की तान छेड़ दी, ज्ञान-विज्ञान के दरिया बहा दिये, ईश-भक्ति की ज्योति जगा दी, अज्ञानता और अत्याचार से नफ़रत पैदा कर दी, क्षमता का पाठ पढ़ाया, दुखों के मारे और समाज के सताये हुए लोगों को गले लगाया। वह वर्षा की बूंदों के समान धरती के हर कोने में बरसे।

आप उनकी बाहुल्यता के साथ उनके गुणों को देखें। उनका विवेक उनकी आत्मा की सरलता, उनकी सुरूचि का हाल पढ़िये इन्सानों के लिए किस तरह का उनका दिल रोता, उन्हें मुसीबत से छुटकारा दिलाने के लिए वह किस तरह अपने को ख़तरे में डालते और अपने बच्चों व सगे सम्बन्धियों को आज़माइश में डालते। उनके शासकों को अपनी जिम्मेदारी का कितना एहसास रहता, और प्रजा में आज्ञापालन व सहयोग की कैसी भावना होती। उनकी इबादत उनकी दुआ, उनकी भक्ति, उनके सेवा भावन, शिष्टाचार के हालात पढ़िये, ज्ञान इन्द्रियों पर नियन्त्रण के साथ स्वयं के लेखा-जोखा, दीन-दुखियों व कमज़ोरों से प्यार, दोस्त दुश्मन के साथ उनके समान व्यवहार और सहृदयता व सहानुभूति के नमूने देखिये। सच तो यह है कि यदि इतिहास के प्रमाणिक और मुतवातिर (क्रमबद्ध) शहादत (साक्ष्य) न होती तो यह बातें किस्से कहानियां और अफसाने मालूम होते। यह महान परिवर्तन अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लहु अलैहि व सललम का एक मोजज़ा (चमत्कार) है और इस बात की पुष्टि करता है कि आप सारे जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजे गये।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ताआला कुरान मजीद में फ़रमाता है:-

अनुवादः "और (ऐ मोहम्मद) हमने तुमको तमाम जहान के लिए रहमत बना कर भेजा है"।

(सूरः अँबिया-१०७)

www.abulhasanalinadwi.org

मजलिस की अन्य हिन्दी पुस्तकें

★ **भारतीय मुसलमान एक दृष्टि में**

लेखक- ***मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी***

वर्तमान भारतीय मुसलमानों का धार्मिक सांस्कृति एवं सामाजिक परिचय, त्योहारों, रीतिरिवाजों, आचार व्यवहार तथा उनकी सामूहिक धर्म व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन है।

मूल्यः

★ **इस्लाम क्या है?**

लेखक- ***मौलाना मु० मंजूर नौमानी***

यह किताब इस्लाम की ठीक-ठीक जानकारी और उसकी शिक्षा का ज्ञान कराती है और इस्लामी जीवन पैदा करने के लिए विशेष धुन और ध्यान से लिखी गई है।

मूल्यः ८.०० रू०

★ **आदर्श शासक**

लेखक- ***मौलाना अब्दुस्सलाम किदवई, नदवी***

चरित्र के सुधार और कर्तव्य पालन की भावना को प्रबल करने की दिशा में यह पुस्तक एक उचित मार्ग दर्शक है।

मूल्यः

★ **मानवता का स्तर**

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी के पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह। जिनमें यह बताया गया है कि हमारी संस्कृति, तथा जीवन के आधारभूत त्रुटियाँ एवं कमजोरियां क्या हैं, हम उन्हें किस प्रकार दूर कर सकते हैं।

मूल्यः

★ **मानवता का संदेश**

लेखक- ***मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी***

वह पाँच प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण भाषण, जिनके द्वारा मानव जाति की आत्मा को झिंझोड़ा गया है। वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण जिसके बिना वर्तमान समाज में व्याप्त असंतोष तथा भ्रष्टाचार का समाप्त होना असम्भव है।

मूल्यः

www.abulhasanalinadwi.org

एकादमी की हिन्दी पुस्तकें

लेखक–मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

★	नबी–ए–रहमत	50·00
★	दस्तूरे हयात (जीवन का पथ-प्रदर्शक)	22·00
★	सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन	20·00
★	इस्लाम एक परिचय	20·00
★	भारतीय मुसलमान एक दृष्टि में	15·00
★	मदीने की डगर	15·00
★	मानवता का संदेश	16·00
★	मानवता का स्तर	6·00
★	जग के मोहसिन	4·00
★	अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह के (अस्मा-ए-हुस्ना)	10·00
★	इस्लाम मुकम्मल दीन मुस्तक़िल तहज़ीब	5·00
★	निशाने राह	4·00
★	नारी की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की बहाली	4·00
★	हिन्दुस्तानी मुसलमानों से साफ़-साफ़ बातें	6·00

लेखन–मौलाना मु० मंज़ूर नोमानी

★	इस्लाम क्या है ?	35·00

लेखक–मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई, नदवी

★	आदर्श शासक	10·00

लेखक–मोहम्मद असद

★	तूफान से साहिल तक	30·00

www.abulhasanalinadwi.org

भारतीय मुसलमान एक दृष्टि में

लेखक- **मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी**

वर्तमान भारतीय मुसलमानों के धार्मिक, साँस्कृतिक एवं सामाजिक परिचय, त्योहारों, रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहार तथा उनकी सामूहिक धर्म व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन है।

आदर्श शासक

लेखक- **मौलाना अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी**

चरित्र सुधार और कर्तव्य पालन की भावना प्रबल करने की दिशा में यह पुस्तक एक उचित मार्गदर्शक है।

मानवता का स्तर

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी के पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह, जिसमें यह बताया गया है कि हमारी संस्कृति तथा जीवन में आधारभूत त्रुटियाँ एवं कमज़ोरियाँ क्या हैं, हम उन्हें किस प्रकार दूर कर सकते हैं ?

मानवता का संदेश

लेखक- **मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी**

वह पाँच प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण भाषण, जिनके द्वारा मानव जाति की आत्मा को झिंझोड़ा गया है तथा वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया गया है।

जग के मोहसिन

मौलाना नदवी का वह व्याख्यान जिसमें आपने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सिद्ध किया है कि मुहम्मद सल्ल० वास्तविक रूप में जग के सबसे बड़े मोहसिन और करुणाधार हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन

लेखक : मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी

"इस्लाम और मानव सभ्यता व संस्कृति" एक सच्चा और सजीव विषय है जिसका सम्बन्ध हज़रत मोहम्मद सल्ल० के अभ्युदय व इस्लामी सन्देश व शिक्षा ही से नहीं, जीवन की वास्तविकताओं, मानवता के वर्तमान व भविष्य तथा सभ्यता व संस्कृति की संरचना में इस्लामी उम्मत की ऐतिहासिक भूमिका से भी है। यह महत्वपूर्ण प्रकरण वास्तव में एक व्यक्ति के प्रयास के बजाय किसी सामूहिक प्रयास की अपेक्षा करता है क्योंकि यह विषय अपनी व्यापकता में विश्वव्यापी है। यह व्यापक भी है और ठोस भी। इसका काल पहली इस्लामी शताब्दी से लेकर वर्तमान शताब्दी तक और इसका विस्तार दुनिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक है। अपने भावार्थ में यह विश्वास व आस्था से आचरण व व्यवहार तक तथा व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन से राजनीति व क़ानून और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तक तथा चिन्तन, ज्ञानमयी व नैतिक उत्थान से लेकर कला कौशल तथा ललित कलाओं तक छाया है।

प्रयास किया गया है कि इस फैले हुए शीर्षक का दस भागों में वर्णन किया जाय जिससे दुनिया को इस्लाम के महान और प्रदर्शित आभार व प्रभाव का कुछ अनुभव हो सके।

***

मजलिस तहकीक़ात व नशरियाते इस्लाम

पोस्ट बॉक्स नं० 119, नदवा, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

नबी-ए-रहमत

प्रस्तुत पुस्तक मौलाना नदवी की नबी-ए-रहमत का हिन्दी अनुवाद है। हजरत मुहम्मद स० की जीवनी पर अब तक लिखी गई प्रसिद्ध एवं प्रमाणिक पुस्तकों में से एक है जो बडे परिश्रम, खोज तथा शोध के बाद लिखी गई है और जिसमें इस विषय पर इससे पहले लिखी गई सभी प्रमाणिक पुस्तकों तथा प्रसिद्ध ग्रन्थों का निचोड आ गया है। यह पुस्तक मूलतः अरबी में लिखी गई थी। थोडे ही समय में काहिरा, जद्दा, कतर से अनेक संस्करण प्रकाशित हुए। अब तक संसार की पाँच छः भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है। लेखक को इसी रचना पर सन् 1980 ई० में चौदहवीं शताब्दी हिज्री के किंग फैसल एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

आशा है यह पुस्तक हिन्दी भाषी भाई बहनों के लिये उतनी ही लाभप्रद सिद्ध होगी जितना इसका अरबी, अंग्रेजी अथवा उर्दू जानने वालों के लिये उपयोगी सिद्ध हुई है।

ईश्वर इस महान जीवनी के अध्ययन से हमारे लिये सुख-समृद्धि शान्ति और सलामती के द्वार खोल दे। आमीन।

मजलिसे तहकीकात व नशरियाते इस्लाम, नदवतुल उलमा, लखनऊ।

www.abulhasanalinadwi.org

दस्तूरे हयात (जीवन का पथप्रदर्शक)

लेखक :

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

आधुनिक युग के व्यस्त जीवन व समय अभाव को ध्यान में रखते हुए एक समय से ऐसी किताब की आवश्यकता थी जो आस्था व विश्वास तथा चरित्र व आचरण हेतु मुसलमानों के लिए एक गाईड बुक का काम करती हो, और समय की आवश्यकताओं एवं मुस्लिम समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु उपयुक्त हो।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक महोदय ने इन ही आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लिखी है और जो "अल्लाह की किताब और सुन्नत व रसूल की जीवन चर्या की रोशनी में एक सच्चे-पक्के मुसलमान के जीवन की पूर्ण कार्य पद्धति, पथप्रदर्शक, आस्था व विश्वास, चरित्र व आचरण के सम्बध में शिक्षओं व रसूल के आदर्शों की व्याख्या, जीवन में सुधार लाने तथा नफ्स के प्रशिक्षण हेतु क़ुरआन व रसूल की शिक्षाओं का एक आदर्श संकलन है।"

हिन्दी– अँग्रेजी– उर्दू– अरबी–

अकादमी ऑफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लीकेशन्स

पोस्ट बाक्स नं० ११६, नदवा, लखनऊ-२२६००७ (भारत)

www.abulhasanalinadwi.org

अकादमी की कुछ महत्वपूर्ण हिन्दी पुस्तकें

लेखक—मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

★ नबी-ए-रहमत

जिसमें हज़रत मोहम्मद स० की जीवनी तथा चरित्र चित्रण (सीरत) प्रस्तुत किया गया है और जिसमें इस विषय पर इससे पूर्व लिखी गई प्रमुख पुस्तकों तथा प्रामाणित ग्रन्थों का निचोड़ आ गया है।

★ दस्तूरे हयात (जीवन का पथ-प्रदंशक)

अल्लाह की किताब और सुन्नत व रसूल की जीवन चार्या की रोशनी में एक सच्चे मुसलमान की जीवनी की पूर्ण कार्य पद्यति, पथ-प्रदंशक आस्था व विश्वास, चरित्र व आचरण आदि का एक आदर्श संकलन।

★ भारतीय मुसलमान एक दृष्टि में

वर्तमान भारतीय मुसलमानों का धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिचय, त्योहारों, रीति-रिवाजो, आचार-व्यवहार तथा उनकी सामूहिक धर्म व्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन है।

★ मानवता का स्तर

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी के पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह, जिसमें यह बताया गया है कि हमारी संस्कृति तथा जीवन में आधारभूत त्रुटियाँ एवं कमजोरियाँ क्या हैं, हम उन्हें किस प्रकार दूर कर सकते हैं।

★ मानवता का संदेश

वह पाँच प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण भाषण, जिनके द्वारा मानव जाति की आत्मा को झिंझोड़ा गया है। वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए एक सक्रिय दृष्टि-कोण जिसके बिना वर्तमान समाज में व्यापक असंतोष तथा भ्रष्टाचार का समाप्त होना असम्भव है।

★

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम

पोस्ट बाक्स न० 119, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org